# भाव रसों का मानव जीवन में भूमिका

**प्रो. अनिल कुमार यादव**
अकाल डिग्री कॉलेज फार वीमेन
संगरूर

सारांश : रसों का भारतीय कलाओं में किसी भी दृश्य, साहित्यिक या संगीत कार्य के सौंदर्य स्वाद के बारे में एक अवधारणा का प्रतीक है जो पाठक या दर्शकों में भावना उत्पन्न करता है लेकिन इसका वर्णन नहीं किया जा सकता है। रस सिद्धांत प्राचीन संस्कृत पाठ नाट्य शास्त्र के अध्याय 6 में किया गया है, जो भरत मुनी को जिम्मेदार ठहराया गया है, लेकिन नाटक, गीत और अन्य प्रदर्शन कलाओं में इसका सबसे पूरा प्रदर्शन कश्मीरी शिवाइट दार्शनिक अभिनवगुप्त (सी. 1000 सीई) के कार्यों में पाया जाता है।) नाट्य शास्त्र के रस सिद्धांत के मुताबिक, मनोरंजन प्रदर्शन कला का वांछित प्रभाव है, लेकिन प्राथमिक लक्ष्य नहीं है, और प्राथमिक लक्ष्य दर्शकों में व्यक्ति को दूसरी समानांतर वास्तविकता में ले जाना है, जो आश्चर्य और आनंद से भरा हुआ है, जहां वह अनुभव करता है अपनी चेतना का सार और आध्यात्मिक और नैतिक प्रश्नों पर प्रतिबिंबित करता है।

पौराणिक कथा के अनुसार, रस सिद्धांत को सत्यभारत पुस्तक में सेंट भरत मुनी द्वारा लिखित रूप में लिखा गया था और पहली सहस्राबदी के अंत में अभिनवगुप्त ने इसका विस्तार किया था। यह आठ या नौ मूल मूड (रस) का वर्णन करता है, जो कला के काम के प्रकृति के आधार पर, सटीक परिभाषित भावनात्मक ट्रिगर्स (भाव) के संयोजन के कारण होते हैं। रासा अवधारणा अभी भी रंगमंच, नृत्य, संगीत, साहित्य और बढ़िया कला में प्रयोग की जाती है और भारतीय सिनेमा को भी आकार दे रही है।

हालांकि रासा की अवधारणा नृत्य, संगीत, रंगमंच, चित्रकला, मूर्तिकला और साहित्य सहित भारतीय कला के कई रूपों के लिए मौलिक है, लेकिन एक विशेष रस की व्याख्या और कार्यान्वयन विभिन्न शैलियों और स्कूलों के बीच अलग है। रस का भारतीय सिद्धांत हिन्दू कला और बाली और जावा (इंडोनिशिया) में रामायण संगीत प्रस्तुतियों में भी पाया जाता है, लेकिन श्रेत्रीय रचनात्मक विकास के साथ। संगीत के लिए हमारे जीवन के लिए एक प्राकृतिक जगह है, सुबह उठ कर पूजा के श्लोक, तकरीबन उसी समय

दूधवाला आता है अपनी साइकिल की घंटी और साथ में सीटी बजाने से लेकर एक फ़कीर के गाने की आवाज़ से लेकर हमारी मां की खाना पकाते समय की गुनगुनाहट और रात में लोरियों की गरमाहट, संगीत हमारे जीवन की खाली जगह को भर देता है और इसीलिए संगीत सब को पसंद है। कहा जाता है कि ब्रह्मा ने जब धरती पर इंसानों के तरह–तरह के दुखों से परेशान देखा तो वेद और उसके चार उपवेदों –ऋग्वेद से पाठ्य, यजुर्वेद से अभिनय, सामवेद से गीत और अथर्ववेदों से रस का संचयन कर पंचम वेद के रूप में नाट्य वेद की रचना की। लोग अपने कष्टों को भूल सके व उससे मुक्ति पा सकें, इसके लिए ब्रह्मा ने इस अनुपम कला की रचना की।

प्राचीन परंपरा : 'विभावनुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पति'

इस मत के अनुसार जिस प्रकार नाना व्यंजनों के संयोग से भोजन करते समय पाक रसों का आस्वादन होता है। उसी प्रकार काव्य या नाटक के अनुशीलन से अनेक भावों का संयोग होता है, जो आस्वाद–दशा में 'रस' कहलाता है। भारत में संगीत की परंपरा अनादिकाल से ही रही है। हिन्दुओं के लगभग सभी दरेवी और देवताओं के पास अपना एक अलग वाद्य यंत्र है। विष्णु के पास शंख है तो शिव के पास डमरू, नारद मुनि और सरस्वती के पास वीणा है, तो भगवान श्री कृष्ण के पास बांसुरी। खजुराहो के मंदिर हो या कोणार्क के मंदिर, प्राचीन मंदिरों की दीवारों में गंधर्वों की मूर्तियां अवेष्टित हैं। उन मूर्तियों में लगभग सभी तरह के वाद्ययंत्र को दर्शाया गया है। गंधर्वों और किन्नरों को संगीत का अच्छा जानकर माना जाता है। सामवेद उन वैदिक ऋचाओं का संग्रह मात्र है, जो गेय हैं। संगीत का सर्वप्रथम ग्रंथ चार वेदों में से एक सामवेद ही है। इसी के आधार पर भरत मुनि ने नाट्यशास्त्र लिखा और बाद में संगीत रत्नाकर, अभिनव राग मंजरी लिखा गया। दुनियाभर के संगीत के ग्रंथ सामवेद से प्रेरित हैं।

भाव रस का विज्ञान : हिन्दू धर्म में भाव रस मोक्ष प्राप्त करने का एक साधन है। भाव रस से हमारा मन और मस्तिष्क पूर्णतः शांत और स्वस्थ हो सकता है। भारतीय ऋषियों ने ऐसी सैंकड़ों ध्वनियों को खोजा, जो प्रकृति में पहले से ही विद्यमान हैं। उन ध्वनियों के आधार पर ही उन्होंने मंत्रों की रचना की, संस्कृत भाषा की रचना की और ध्यान में सहायक ध्यान ध्वनियों की रचना की। इसके अलावा उन्होंने ध्वनि विज्ञान को अच्छे से समझकर इसके माध्यम से शास्त्रों की रचना की और प्रकृति को संचालित करने वाली ध्वनियों की खोज भी की। आज का विज्ञान अभी भी भाव रस और ध्वनियों के महत्व और प्रभाव की खोज में लगा हुआ है, लेकिन ऋषियों–मुनियों से अच्छा काई भी संगीत के रहस्य और उसके विज्ञान को नहीं जान सकता। प्राचीन भारतीय संगीत दो रूपों में प्रचनल में था –

संगीत जिसके मुख्यतः दो विभाजन हैं – 1. शास्त्रीय संगीत और 2. लोक संगीत।

शास्त्रीय संगीत शास्त्रों पर आधारित और लोक संगीत काल और स्नान के अनुरूप प्रकृति के स्वच्छंद वातावरण में स्वाभाविक रूप में पलता हुआ विकसित होता रहा। हालांकि शास्त्रीय संगीत को विद्वानों और कलाकारों ने अपने–अपने भाव रस से नियमबद्ध और परिवर्तित किया और इसकी कई प्रांतीय शैलियां विकसित होती चली गईं तो लोक संगीत भी अलग–अलग प्रांतों के हिसाब से अधिक समृद्ध होने लगा। बदलता संगीतः मुस्लिमों के शासनकाल में प्राचीन भारतीय संगीत की समृद्ध होने लगा। बदलता संगीतः मुस्लिमों के शासनकाल में प्राचीन भारतीय संगीत की समृद्ध परंपरा को अरबी और फारसी में ढालने के लिए आवश्यक और अनावश्यक और रुचि के अनुसार उन्होंने इसमें अनेक परिवर्तन किए। उन्होंने उत्तर भारत की संगीत परंपरा का इस्लामीकरण करने का कार्य किया। जिसके चलते नई शैलियां भी प्रचलन में आईं, जैसे ख्याल व गजल आदि। बाद में सूफी आंदोलन ने भी भारतीय संगीत पर अपना प्रभाव जमाया। आगे चलकर देश के विभिन्न हिस्सों में कई नई पद्धतियों व घरानों का जन्म हुआ। ब्रिटिश शासनकाल के दौरान पाश्चात्य संगीत से भी भारतीय संगीत का परिचय हुआ।

इस दौर में हारमोनियम नाम वाद्य यंत्र प्रचलन में आया। दो संगीत पद्धतियां : इस तरह वर्तमान दौर में हिन्दुस्तानी संगीत और कर्नाटकी संगीत प्रचलित है। हिन्दुस्तानी संगीत मुगल बादशाहों की छात्रछाया में विकसित हुआ और कर्नाटक संगीत दक्षिण के मंदिरों में विकसित होता रहा। हिन्दुस्तानी संगीतः यह संगीत उत्तरी हिन्दुस्तान में – बंगाल, बिहार, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, गुजरात, जम्मू–कश्मीर तथा महाराष्ट्र प्रांतों में प्रचलित है। कर्नाटक संगीत : यह संगीत दक्षिण भारत में तमिलनाडु, मैसूर, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश आदि दक्षिण के प्रदेशों में प्रचलित है। वाद्य यंत्र : मुस्लिम काल में नए वाद्य यंत्रों की भी रचना हुई, जैसे सरोद और सितार। दरअसल ये वीणा के ही बदले हुए रूप हैं। इस तरह वीणा, बीन, मृदंग, ढोल, डमरू, घंटी, ताल, चांड, घटम्, पुंगी, डंका, तबला, शहनाई, सितार, सरोद, पखावज, संतूर आदि का आविष्कार भारत में ही हुआ है। भारत की आदिवासी जातियों के पास विचित्र प्रकार के वाद्य यंत्र मिल जाएंगे जिनसे निकलने वाली ध्वनियों को सुनकर आपके दिलोदिमाग में मदहोशी छा जाएगी। उपरोक्त सभी तरह की संगीत पद्धतियों को छोड़कर आओ हम जानते हैं, हिन्दू धर्म के धर्म–कर्म और क्रियाकांड में उपयोग किए जाने वाले उन 10 प्रमुख वाद्य यंत्रों को जिनकी ध्वनियों को सुनकर जहां घर का वास्तु दोष मिटता है वहीं मन और मस्तिष्क भी शांत हो जाता है।

करुण रस का उदाहरण है ''जीता था जिसके लिए जिसके लिए मरता था''

नृत्य शैली में भाव रस : भारतीय नृत्य शैली से ही दुनियाभर की नृत्य शैलियां विकसित हुई है। भारतीय नृत्य मनोरंजन के लिए बना था। भारतीय नृत्य ध्यान की एक विधि के समान कार्य करता है। इससे योग भी जुड़ा हुआ है। सामवेद में नृत्य का उल्लेख मिलता है। भारती की नृत्य शैली की धूम सिर्फ भारत में ही नहीं अपितु पूरे विश्व में आसानी से देखने को मिल जाती है हड़प्पा सभ्यता में नृत्य करती हुई लड़की की मूर्ति पाई गई है, जिससे साबित होता है कि इस काल में ही नृत्यकला का विकास हो चुका था। भरत मुनि का नाट्य शास्त्र नृत्यकला का सबसे प्रथम व प्रामाणिक ग्रंथ माना जाता है। इसको पंचवेद भी कहा जाता है। इंद्र की साभ में नृत्य किया जाता था। श्विव और पार्वती के नृत्य का वर्णन भी हमें पुराणों में मिलता है। नाट्यशास्त्र अनुसार भारत में कई तरह की नृत्य शैलियां विकसित हुई जैसे भरतनाट्यम चिपुड़ी, ओडिसी, कत्थक, कथकली, यज्ञगान, कृष्णअट्टम, मणिपुरी और मोहिनी अट्टम। इसके अलावा भारत में कई स्थानीय संस्कृति और आदिवासियों के क्षेत्र में अद्भुत नृत्य देखने को मिलता है जिसमें से राजस्थान के मशहूर कालबेलिया नृत्य को यूनेस्को की नृत्य सूची में शामिल किया गया है। संगीत द्वारा रोग–चिकित्सा हिस्टीरिया रोग के रोगी पर निर्दिष्ट समय में जब रोग का आक्रमण होता है, उसकी अवस्था को लक्ष्य करके डाक्टर लोग ऐसे समय में रोगी को संगीत के प्रभाव से मुग्ध कर रखने की व्यवस्था करते हैं। इसका फल यह देखा गया है कि रोगी अन्य किसी प्रकार की औषधि का व्यवहार न करके भी न केवल संगीत की सहायता से भीषण हिस्टीरिया के आक्रमण से मुक्त हो गया है। जीव–जन्तुओं में संगीत के प्रति जो असाधरण मोह देखा जाता है वह तो है ही, इसके सिवा उनमें विशेष सुर या संगीत को पसन्द करने की जो शक्ति देखी जात है, वह भी आश्चर्यजनक है। आमतौर से यह देखा जाता है कि सब जानवरों में किसी न किसी संगीत के प्रति आसक्ति और सुर–विशेष के प्रति विद्वेष देखा जाता है। इसका दृष्टान्त खोजने के लिए हमें बहुत दूर नहीं जाना पड़ेगा। संगीत का वैज्ञानिक प्रभाव इंटरनेशनल साइंस एंड इंजीनियरिंग फेयर ने यह बात शो से साबित की है। संस्था ने इस शोध में करीब 1500 बच्चों पर अलग–अलग तरह के संगीत का प्रभाव परखा। शास्त्रीय संगीत के प्रभाव के रूप में यह सामने आया कि इसे सुनने वाले बच्चों के शरीर में श्वेत रक्त कणिकाओं की संख्या अधिक पाई गई। जिन बच्चों में शास्त्रीय संगीत का असर जांचने के लिए शोध किया गया उनका यह भी कहना था कि इस तरह का संगीत सुनकर वे तनावरहित महसूस करते हैं। विश्व में प्रचलित विभिन्न दिवसों में एक है संगीत दिवस में संगीत नाम एक दिन है।

प्रत्येक वर्ष 21 जनू को विश्व संगीत दिवस मनाया जाता है। यह संगीतज्ञों व संगीत प्रेमियों के लिए बहुत ही खुशी की बात है। विश्व संगीत दिवस को फेटेडे ला म्यूजिक के नाम से भी जाना जाता है। इस त्योहार की शुरुआत 1982 में फ्रांस में हुई। इसको मनाने का उद्देश्य अलग–अलग तरीके से

म्यूजिक को प्रोपोगैंडा तैया करने के अलावे एक्सपर्ट व नए कलाकारों को एक मंच पर लाना है। हमारे शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य को पुनरुज्जीवित करने की जो एक स्निग्ध एवं आश्चर्यजनक शक्ति संगीत में है, इस बात का प्रत्यक्ष अनुभव अब संसार के श्रेष्ठ चिकित्सकों को अस्पतालों और गवेषणालयों के प्रयोगों द्वारा होने लगा है। यहाँ तक कि अध्यापक एस.बी. क्रेकफ् ने सोवियत रूस के कई अस्पतालों में परीक्षा करके प्रमाणित किया है कि संगीत नेत्ररोगियों की दृष्टि शक्ति को वर्द्धित कर सकता है। इस प्रकार की संगीत चिकित्सा में रोगियों को किसी प्रकार की औषधी खाने के लिए नहीं दी जाती, केवल नियत समयों में उसी निर्दिष्ट संगीत सुनना पड़ता है। परीक्षा के रूप में यह देखा जा सकता है कि पालतू कुत्ते कभी–कभी कांसे का विकट टन्–टन् शब्द और शंख का उच्च घोष बर्दाश्त नहीं कर सकते। इसीलिए कांसाया शंख की आवाज होते ही कुत्ते उत्तेजित कण्ठ से भूंक–भूंककर उसका प्रतिवाद करना आरम्भ कर देते हैं। ऐसा मालूम होता है, मानों वे शंख के उच्च घोष को विद्रूप करके उसके अनुरूप उच्च कण्ठ से हृदय विदारक आक्षेप ध्वनित करते हों। किन्तु ये ही कुत्ते जब बेहाला, बांसुरी या हारमोनियम का नरम कोमल सुर सुनते हैं, तो उससे उत्तेजित न होकर शान्तभाव से उसे ग्रहण कर लेते हैं। इसी प्रकार यह भी प्रत्यक्ष देखा गया है कि ढोल, डफ मृदंग आदि का शब्द सुनकर कुत्ता जिस तरह उत्तेजित हो उठता है, सुमधुर कण्ठ संगीत से, चाहे कितनी ही ऊंची आवाज से क्यों न हो, उसका चित्त–विभ्रम कुछ भी नहीं होता।

अध्यापक जे.जे. टामसन ने भाव रस के विषय में लिखा है – एक दिन मैं अपने गांव के बंगले के नीचे की मंजिल में ड्रांइग रूप में बैठा हुआ पियानो बजा रहा था। कमरे के बाहर घास पर एक गाय का बच्चा घास खा रहा था। पियानो से जब सादा सुर बज रहा था, उस समय वह बच्चा निविष्ट चित्त से घास खा रहा था; किन्तु जब किसी कोमल पर्दे से सुर बजता थसा, गाय का बच्चा घास खाना भूलकर, मुंह उठाकर कमरे की खिड़की की ओर देखने लगता था। जब तक शेष सप्तक और उसके कोमल सुर में बाजा बजता था, तब तक वह घास खाना छोड़कर मानो सुर के रस में तन्मय हो जाता था। किन्तु जब भी सादा सुर बजने लगता था, अथवा जब तक किसी कोमल पर्दे का सुर नहीं सुना जाता था, तब तक वह विरक्त होकर पियानो का सुर सुनना बन्द करके घास खाने में मन लगाये रहता था। सिर्फ एक ही दिन नहीं, बल्कि लगभग दो सप्ताह एक प्रतिदिन मैं यह व्यवहार देखा करता था। उसकी संगीत प्रियता की विशेष रूप में परीक्षा करने के लिए मैंने एकमात्र कोमल पर्दे पर गत बजाकर और सादे सुर में उच्च स्वर से गान गाकर बार–बार उसकी अवस्था का लक्ष्य किया है। किन्तु बच्चे का रुख शुरू से आखिर तक एक ही प्रकार देखा गया। जीव–जगत् में संगीत प्रभाव यहीं तक नहीं देखा जाता।

मनोवैज्ञानिक, चिकित्सा जिस प्रकार उन्माद रोग में, आंख और कान के रोगों में, साधारण अस्त्र–चिकित्सा में और सब प्रकार की दन्त चिकित्सा में संगीत का अमोद्य औषधि के रूप में व्यवहार करते हैं, उसी प्रकार जीव–जन्तुओं के रोग–निवारण में, उनकी शरीर पुष्टि के लिए, विशेषकर उनके प्रजनन के व्यापार में भी संगीत का सफल प्रयोग किया जाता है। जीव जन्तु के रोग निवारण में संगीत का प्रयोग किस प्रकार आरम्भ हुआ, इसका एक इतिहास है। मानसिक रोगों में संगीत का फलाफल डॉ. विलियम वान डी. वाल ने उसका प्रयोग करना आरम्भ किया–विद्रोह–भावा–पन्न कैदियों और खतरनाक दागी कैदियों के ऊपर। इससे बहुत कुछ सफलता प्राप्त होने पर इन्होंने संगीत द्वारा जीव–जन्तुओं के शरीर में कहां तक परिवर्तन लाया जा सकता है, इसकी परीक्षा की। नेफ्को चेयरमैन एस.पी.चौहान ने कहा कि संगीत जिस व्यक्ति के साथ जुड़ा है वह व्यक्ति कभी भी हिंसक एवं विद्रोही नहीं हो सकता। हमारे युवा वर्ग को विकास एवं राष्ट्रोन्मुख बनाने के लिए उन्हें विशुद्ध भारतीय संगीत से जोड़ना होगा। गुलज़ार साहब कहते हैं 1972 का साल हमारे फिल्म जगत के संगीत के लिए एक बहुत ही बेहतरीन समय साबित। राजस्थान की मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे ने जीवन में संगीत की महत्ता को रेखांकित करते हुए कहा कि जीवन ही संगीत है तथा जीवन के हर रंग में संगीत की आवश्यकता निहित है। संसार में ऐसा कोई भी तत्व नहीं है जिसमें गुण और दोष न हों शास्त्रीय संगीत अपनी जटिलता चमत्कारपूर्ण अभिव्यक्ति की प्रधानता, भाव प्रवणत की कमी के कारण विकृत हुआ तो फिल्म संगीत असभ्य अभिव्यक्ति, पॉप और रॉक संगीत के मिश्रण से मधुर ध्वनि से दूर हो गया, लेकिन इस संसार में प्रत्येक वस्तु पुनर्चक्रित अवश्य होती है, आज का समाज और युवा यदि इस कोलाहल के उन्माद में व्यस्त है लेकिन एक दिन ऐसा जरूर आएगा जब ये गीत जरूर बज उठेगा ''जाइये आप कहां जाएंगे ये नज़र लौट के फिर आएगी।''

**सन्दर्भ सूची :**

संगीत के सुर – एस.पी. सिंह
संगीत कला – डॉ. पी.के. शर्मा
फिल्मी झरोखे – पत्रिका
ओशो–पत्रिका
टाईम्स ऑफ इंडिया – समाचार पत्र
फिल्म में संगीत की महत्तता – थिसिज
http://teachersofindia.org/hi/article
hindividya.com
साक्षात शोध परिद्द्त
http://hindicinenglish.blogspot.com/